International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

रामायण में वर्णित शिक्षा-व्यवस्था

ऋचा
शोधार्थी, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सभ्यता एवं संस्कृति के सम्यक् प्रसार तथा विकास के लिए एवं वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति के लिए शिक्षा नितान्त आवश्यक है| मनुष्य जीवन में शिक्षा का सर्वाधिक महत्त्व है| चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास, कर्तव्य भावना की जागृति, प्राचीन साहित्य एवं संस्कृति के संरक्षण के लिए शिक्षा की आवश्यकता है|

रामायणकालीन संस्कृति में शिक्षा का कितना अधिक प्रचार-प्रसार था, यह दशरथ द्वारा पालित अयोध्या नगरी के वर्णन से ज्ञात होता है जहाँ एक भी नागरिक ऐसा नहीं था जिसने अनेक शास्त्रों का अध्ययन न किया हो अथवा जो विद्याहीन हो –

नास्तिको नानृती वापि न कश्चिदबहुश्रुतः |
नासूयको न चाशक्तो नाविद्वान् विद्यते क्वचित्||[1]

रामायण काल में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को केवल साक्षर नहीं अपितु सुसंस्कृत बनाना था | राम का भरत से यह कथन "कच्चिते सफलं श्रुतम्" इसकी पुष्टि करता है | इसका अर्थ यही था कि क्या भरत ने विद्या के शीलवृत्त गुणों का अभ्यास करके उनको आत्मसात् कर लिया है | शिक्षा प्रदान करने वालों के लिए जितने विभिन्न शब्द रामायण में प्रयुक्त हुए हैं उनसे भी शिक्षा के व्यापक प्रचार का ज्ञान होता है | यथा- गुरु, आचार्य, कुलपति, श्रोत्रिय, तापस, ब्रह्मवादी, उपाध्याय, शिक्षक, परिव्राजक[2] |

शिक्षण संस्थानों के रूप में तत्कालीन युग में आश्रमों की सर्वाधिक प्रतिष्ठा थी | सैकड़ों की संख्या में शिष्य आश्रमों में शिक्षा ग्रहण करते थे | भारद्वाज ऋषि के आश्रम में निरन्तर यज्ञ, अग्निहोत्र, वेदाध्ययन तथा पुराण कथा-प्रवचन चलता रहता था –

स प्रविश्य महात्मानमृषिं शिष्यगणैर्वृतम् |
संशितव्रतमेकाग्रं तपसा लब्धचक्षुषम् ||
हुताग्निहोत्रं दृष्टैव महाभागः कृताञ्जलिः |
रामः सौमित्रिणा सार्धं सीतया चाभ्यवादयत् ||[3]

---

1 वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, 6.14
2 व्यास, शान्तिकुमार नानूराम, रामायणकालीन संस्कृति, पृ. 18
3 वा.रा., अयोध्या काण्ड, 54.11-12

वाल्मीकि ऋषि के आश्रम में भी यही स्थिति थी, किन्तु इस आश्रम में कला एवं संगीतादि की भी शिक्षा दी जाती थी | लवकुश ने वाल्मीकि के समीप गान एवं वीणावादन की शिक्षा ग्रहण की थी[4] |

अयोध्या के समीप वेद की विभिन्न शाखाओं के अध्ययन के लिए अनेक छात्र संघ अथवा विद्यालय भी स्थित थे | वनवास जाते समय राम ने उन सभी को सम्मानपूर्वक पर्याप्त धन दान दिया था[5] |

इनके अतिरिक्त भी सभाओं, वन-उपवनों में, गोष्ठियों तथा बृहद् यज्ञों में पारस्परिक वाद-विवादों एवं तर्क-वितर्कों से भी शिक्षा प्राप्त होती थी | राजा दशरथ के अश्वमेध यज्ञ में एकत्रित हुए विभिन्न विद्वान् दो कर्मों के मध्यावकाश में विभिन्न प्रकार से शास्त्रार्थ करते थे –

कर्मान्तरे तदा विप्रा हेतुवादान् बहूनपि |
प्राहुः सुवाग्मिनो धीराः परस्परजिगीषया[6] ||

तत्कालीन समय में वेदाध्ययन की सुनिश्चित परम्परा थी | शिक्षा का स्वरूप मुख्यतः मौखिक था | लेखन-कला से लोग परिचित अवश्य थे | अशोक वाटिका में सीता के पास राम का नाम लिखी मुद्रिका लेकर हनुमान गए थे –

रामनामांकितं चेदं पश्य देव्यंगुलीयकम्[7]

लंकायुद्ध में राम के बाणों पर उनका नाम लिखा होता था –

रामनामांकितैः शरैः[8]

लेखन कला के स्पष्ट प्रमाण मिलने पर भी यह स्पष्ट है कि रामायण-काल में अधिकांशतः शिक्षा मौखिक रूप में ही दी जाती थी | श्रुति की परम्परा अनविच्छिन्न थी |

तत्कालीन संस्कृति में शिक्षा के विषयों का स्थान-स्थान पर अनेक प्रकार से उल्लेख हुआ है | द्विजाति के लिए वेदाध्ययन अनिवार्य था | ऋक्, यजु और साम श्रुति के साथ-साथ अथर्व का भी अध्ययन किया जाता था |[9]

राम वेदों में पारंगत थे –

यजुर्वेदविनीतश्च वेदविद्भिः सुपूजितः|

[4] उत्तरकाण्ड, 93.14-16
[5] अयो. 23.15-19
[6] बाल. 14.19
[7] सुन्दरकाण्ड, 36.2
[8] युद्ध. 64.25
[9] युद्ध. 105.13, बाल. 14.43, 15.2 – होता, अध्वर्यु, उद्गाता एवं ब्रह्मा नामों से चारों वेदों का ग्रहण |

धनुर्वेदे च वेदे च वेदाङ्गेषु च निष्ठितः[10]||

अर्थात् राम को यजुर्वेद की भी अच्छी शिक्षा मिली है | वेदवेत्ता विद्वानों ने उनका बड़ा सम्मान किया है | वे चारों वेद, धनुर्वेद और छहों वेदांगों के भी परिनिष्ठित विद्वान् हैं |

तत्कालीन युग तक विभिन्न वेदांग भी प्रचलित एवं व्यवस्थित थे | उपनिषद् ज्ञान के लिए 'वेदान्त' शब्द प्रचलित था | वेदान्त की भी शिक्षा दी जाती थी | रावण केलिए 'वेदान्तगः'[11] विशेष प्रयुक्त हुआ है | इस प्रकार रामायण के समय में सम्पूर्ण वैदिक साहित्य चतुर्वेद, वेदांग एवं वेदान्त शिक्षा के विषय रहे थे[12]|

तत्कालीन शिक्षा प्रणाली में गुरु या शिक्षक का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान था | अतएव गुरु का सम्मान करना परम कर्त्तव्य था | शिक्षा देने के कारण गुरु भी पिता समान है –

ज्येष्ठो भ्राता पिता वापि यश्च विद्यां प्रयच्छति |
त्रयस्ते पितरो ज्ञेया धर्मे च पथि वर्तिनः ||[13]

गुरुवचन की अवहेलना कदापि नहीं करनी चाहिए[14]| गुरु के वचन पालन से सत्पुरुष पथ का अनुसरण होता है –

मम त्वं वचनं कुर्वन् नातिवर्तैः सतां गतिम्[15]

शिष्य के वशानुवर्ती एवं योग्य होने पर गुरु प्रसन्नतापूर्वक अपना समस्त ज्ञान प्रदान कर देता है |

रामायण काल में राजा वास्तविक शासक होता थे, उनके लिए सुशिक्षित होना नितान्त आवश्यक था | एतदर्थ प्राचीन आचार्यों ने राजा की शिक्षा को बहुत महत्त्व दिया है | कामंदक तो अशिक्षित राजा की अपेक्षा नेत्रहीन राजा को ही श्रेष्ठ मानते हैं |[16]

इक्ष्वाकु वंश के सभी राजा सुशिक्षित थे |[17] राजा दशरथ वेद के ज्ञाता थे | राजा दशरथ ने राम, लक्ष्मण को शिक्षा हेतु विश्वामित्र के अधीन कर दिया था | उनके साहचर्य से उन्होंने

---

10 सुन्दर. 35.14
11 एषोऽहिताग्निश्च महातपाश्च वेदान्तगः कर्मसु चाग्र्यशूरः|
एतस्य यत् प्रेतगतस्य कृत्यं तत् कर्तुमिच्छामि तव प्रसादात्|| युद्ध.109.23
12 अयो.1.20, किष्किन्धा.3.28, बाल.14.3,35, युद्ध.28.19
13 किष्कि.18.13
14 बाल.26.3, अयो.30.33
15 अयो.111.4
16 नीतिसार, 15.4
17 बाल.17,13.1,2 एवं 14.1,2

IJARMT

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)

An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

जो शिक्षा प्राप्त की, उसे स्नातकोत्तर प्रशिक्षण कहना अधिक उपयुक्त होगा | राजा दशरथ के चारों पुत्र सभी विद्याओं में दक्ष थे | राम तो अपने युग के सर्वोत्तम शिक्षा प्राप्त राजकुमार थे |

राम के पुत्र अन्तेवासिक थे | उन्हें वाल्मीकि ने वेदों के अतिरिक्त संगीत का भी ज्ञान करवाया था | वे दोनों लव एवं कुश गान्धर्व विद्या के ज्ञाता थे | उन्होंने समस्त रामायण काव्य रूप में कंठस्थ की थी |

इमास्तन्त्रीः सुमधुराः स्थानं वापूर्वदर्शनम् |

मूर्च्छयित्वा सुमधुरं गायतां विगतज्वरौ ||[18] राक्षसराज रावण भी उच्चकोटि का विद्वान् था | उसका शास्त्र ज्ञान परिपूर्ण था, तभी उसे सर्वशास्त्र विशारद एवं वेदान्तवेत्ता कहा गया है | उसने अपने पुत्रों एवं बन्धुओं को भी उच्च शिक्षा प्रदान की थी |

सर्वे सुबलसम्पन्नाः सर्वे विस्तीर्णकीर्तयः |
सर्वे समरमासाद्यः न श्रूयते स्म निर्जिताः ||
देवैरपि सगन्धर्वैः संकिन्नरमहोरगैः |
सर्वे अस्त्रविदुषो वीराः सर्वे युद्धविशारदाः |
सर्वे प्रवरविज्ञानाः सर्वे लब्धवरास्तथा ||[19]

तत्कालीन समय में शास्त्र तथा ललित कलाओं में दक्षता प्राप्त करने से अधिक अस्त्र-शस्त्र का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक था | आर्यजन एवं राक्षस जनों के संघर्ष भरे उस युग में प्रत्येक जन का शारीरिक दृष्टि से सबल एवं सुदृढ होना आवश्यक था | अतः युद्ध शिक्षण उस समय की शिक्षा का एक अनिवार्य अंग था | युद्ध की शिक्षा से व्यायाम भी होता था तथा नैपुण्य भी अर्जित होता था |

रामायण के प्रायः सभी पुरुष पात्र धनुर्वेद में परम प्रवीण थे– "धनुर्वेदे च निष्ठिताः" | राज्य के सम्यक् परिपालन के लिए राजनीति एवं कूटनीति का शिक्षण आवश्यक था |[20]

पुराण, इतिहास एवं धर्मशास्त्र भी तत्कालीन शिक्षा के विषय थे, क्योंकि इनको सम्यक्तया जाने बिना न्याय एवं दण्ड का उचित परिपालन नहीं हो सकता था | परिवार अथवा राज्य की आर्थिक स्थिति की दृष्टि से अर्थशास्त्र भी शिक्षा का उपयोगी विषय था |

आयस्ते विपुलः कच्चित् कच्चिदल्पतरो व्ययः |
अपात्रेषु न ते कच्चित् कोषो गच्छति राघव ||[21]

---

[18] उत्तर.93.14
[19] युद्ध.69.12,13
[20] अयो.106.16, 21.36
[21] अयो.100.54

रामायण के सभी काण्डों में स्पष्टतः अथवा प्रकारान्तर से शिक्षा के विभिन्न विषयों का उल्लेख हुआ है, किन्तु रामायण का एक स्थल ऐसा भी है जहाँ तत्कालीन शिक्षा के विभिन्न विषयों का एकत्र ग्रहण हो जाता है | लव-कुश का गान सुनने के लिए राम ने सभा में जिन विशेषज्ञों को बुलाया था, उनसे शिक्षा के विषयों की लम्बी सूची बन जाती है |[22] तदनुसार तत्कालीन संस्कृति में वेद, पुराण, व्याकरण, संगीत, छन्दशास्त्र, ज्योतिष, क्रियाकलाप, विभिन्न भाषाएँ, चित्रकला, नीतिशास्त्र, युद्ध, वेदान्त, शासन व्यवस्था, धर्मशास्त्र, न्यायशास्त्र आदि शिक्षा के विषय थे | इनके अतिरिक्त समय-समय पर गुरु, पिता तथा अग्रज भी नैतिक शिक्षा दिया करते थे |

रामायण के समय तक स्त्री से वेदपाठ का अधिकार छिना नहीं था | वे नियमित रूप से सन्ध्योपासना तथा होम किया करती थी |

सीता सन्ध्योपासना करती थी –

सन्ध्याकालमनाः श्यामा ध्रुवमेष्यति जानकी |
नदीं चेमां शुभजलां संध्यार्थे वरवर्णिनी ||[23]

राम की माता कौसल्या मंत्रोच्चारण पूर्वक अग्नि में आहुति देती थी | वानर स्त्री तारा भी पर्याप्त शिक्षित तथा मन्त्रवित् थी –

ततः स्वस्त्ययनं कृत्वा मन्त्रविद् विजयैषिणी |
अन्तःपुरं सह स्त्रीभिः प्रविष्टा शोकमोहिता ||[24]

अर्थात् वह पति की विजय चाहती थी और उसे मन्त्र का भी ज्ञान था | इसलिए उसने बाली की मंगल कामना से स्वस्तिवाचन किया |

स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त करके इतनी विवेकशील हो जातीं थी कि लम्पट या दुराचारी व्यक्ति के अभिप्राय को समझकर बुद्धिपूर्वक आचरण कर सकें |

रामायण महाकाव्य से स्पष्टतः विदित होता है कि राजा सुशिक्षित और विद्यानुयायी होते थे | अतः उनके लिए विद्या और ज्ञान के प्रचार में अभिरुचि रखना स्वाभाविक था यद्यपि इस युग में वर्तमान युग की भांति राजकीय शिक्षण संस्थाएं न थीं | तथापि अन्य उपायों द्वारा शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाता था | रामायणकालीन राजा विद्वान् ब्राह्मणों के आश्रयदाता थे |

[22] उत्तर.94.4-10
[23] सुन्दर.14.49
[24] किष्कि.16.12

राजा दशरथ के शासनकाल में वसिष्ठ, कात्यायन, विश्वामित्र आदि विद्वानों को धन द्वारा सम्मानित किया जाता था –

तामग्निमद्भिर्गुणवद्भिरावृतां द्विजोत्तमैर्वेदषडङ्गपारगैः |

सहस्रदैः सत्यरतैर्महात्मभिर्महर्षिकल्पैर्ऋषिभिश्च केवलैः ||[25]

राम, शिक्षक एवं शिक्षालयों के महान् पोषक थे | वन प्रस्थान करते समय उन्होंने अपनी सम्पत्ति वितरण की थी | उसमें छात्र संघों को अपूर्व दान-दक्षिणा प्राप्त हुई थी | अयोध्या में तैत्तिरीय चरण का एक शिक्षालय था | जिसके आचार्य अगस्त तथा कौशिक थे | राम ने उन्हें मणि, सुवर्ण, रजत तथा गौ भेंट की थी |[26]

राजधानी में रहने वाले मेखलाधारी ब्रह्मचारियों का अपना पृथक् संघ था, जिसका भरण-पोषण राज-परिवार द्वारा होता था | राम के वनगमन के समय कौसल्या ने इसको एक सहस्र निष्क दान में दिए थे| अन्य आचार्य, ऋत्विज्, पुरोहित भी राजवृत्ति के आश्रित थे | इनका प्रमुख कार्य था – शिक्षा प्रदान करना | इससे स्पष्ट है कि रामायणकालीन शिक्षा व्यवस्था में भारतीय संस्कृति की नैतिक एवं धार्मिक मान्यताओं का पोषण किया जाता था तथा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का समुचित ध्यान रखा जाता था |

[25] बाल.5.23
[26] अयो.32.13,14